इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
उड़्यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर।। ३३ ।।

मूल मिलावे में बैठे ही अपने घर में जाग गए। सबके मनकी इच्छा पूरी हो गई। अज्ञानता उड़ गई और नजर खुल गई। सब अपने घर में उठ बैठे।

हांसी न रहे पकरी, धनीऐं जो साथ पर करी।
हंसते ताली देकर उठे, धनी महामत साथ एकठे।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो सुन्दरसाथ पर हंसी की है, परमधाम में उठने के बाद काबू से बाहर होगी। सभी सुन्दरसाथ और महामति अपने पिया के साथ ताली बजाकर एक साथ उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। १०१८ ।।

पख पुष्ट मरजाद प्रवाह

अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पख।
एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढूं निरवान।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को कहती हैं कि अब एक सौ आठ पक्षों का वर्णन करती हूं। उसे हृदय में रखना। एक विचार मैं तुम्हें बताती हूं जिसका सार निश्चित रूप से निकालूंगी।

माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ।
निसंक आपोपा डार्‌या जिन, निहकर्म पैंडा लिया तिन।। २ ।।

माया में जितने भी समर्थ जीव हैं वह केवल धन सम्पत्ति के लिए दौड़ते हैं। जिन्होंने निडर होकर अपने आपको कुर्बान किया है, उन्होंने ही सच्चा रास्ता ग्रहण किया है।

पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पख, याको सार बताऊं लख।
ताके हिसे किए नौं, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौं।। ३ ।।

पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह पक्ष कहे जाते हैं, जिनके सार को देखकर बताती हूं। इन तीन के नौ हिस्से किए तो नवधा (नौ) प्रकार की भक्ति से बैकुण्ठ तक की सीढ़ी चढ़ते हैं और इस तरह से पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह के नौ-नौ भाग हो गए।

भी ताके बांटे किए सताईस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीस।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुंठ चढ़े या विवेक।। ४ ।।

फिर नौ बांटकर सत्ताईस किए। इस तरह से नवधा भक्ति वाले पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह से बैकुण्ठ नाथ की भक्ति कर ऊंचे चढ़ते हैं। इसके भी तीन-तीन हिस्से किए और इक्यासी पक्ष हुए। जिसके विवेक से चलकर बैकुण्ठ पहुंचते हैं। (नवधा प्रकार की भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, सखा, आत्म निवेदन। इनको किस किसने किया? श्रवण **परीक्षित**, कीर्तन **शुकदेव**, स्मरण **प्रहलाद**, पाद-सेवन **लक्ष्मी**, अर्चना **राजा पृथु**, वन्दना **अक्रूर**, दास्य **हनुमान**, सखा **अर्जुन**, आत्म निवेदन **राजा बलि**।) हर एक भक्ति को तीन-तीन तरह से सुनना और फिर प्रत्येक भाव की भक्ति तीन तरह से लाना, यह इक्यासी पक्ष हैं।

Nijanand App

तहां चार विध की कही मुगत, करनी माफक पावे इत।
इतथें जो कोई आगे जाए, निराकार से न निकसे पाए।।५।।

बैकुण्ठ में चार प्रकार की मुक्ति कही है अर्थात् सालोक्य, सारूप्य, सामीप्य और सायुज्य, जिसे अपनी करनी (कर्म) के माफिक जीव प्राप्त करते हैं। यहां से कोई आगे जाना चाहता है तो निराकार में रुक जाता है। निराकार से निकल नहीं पाता।

पख बयासिमां जो कह्या, वल्लभाचारज तहां पोहोंचिया।
स्यामा वल्लभियों करी बड़ी दौर, एभी आये रहे इन ठौर।।६।।

बयासीवां पक्ष जो कहा है, वहां वल्लभाचार्य पहुंचे हैं। श्यामां वल्लभी मत ने दौड़ की। वह भी यहां आकर रुक गए (यह गोलोक धाम तक की पहुंच है)।

छेद इंड में कियो सही, पर अखंड दृष्टें आया नहीं।
आड़ी सुंन भई निराकार, पोहोंच न सके ताके पार।।७।।

इन्होंने ब्रह्माण्ड को पार तो किया, किन्तु अखण्ड नजर में नहीं आया। इनके आड़े शून्य निराकार आ गया जिससे आगे नहीं जा सके।

इनों की तो एह सनंध, पीछे फेर पकड़्या प्रतिबिंब।
और साध अलेखे केते कहूं, निसंक दौड़ करी जिनहूँ।।८।।

इनकी ऐसी हकीकत हुई। जब इनको आगे कुछ नजर नहीं आया तो उन्होंने प्रतिबिम्ब की लीला को पकड़ लिया। कितने साधु महात्माओं की बात कहूं, जिन्होंने निडर होकर बहुत दौड़ की।

ग्यानी अनेक कथें बहु ग्यान, ध्यानी कई बिध धरें ध्यान।
पर ए सबही सुन्य के दरम्यान, छूट्या न काहूं संसे उनमान।।९।।

ज्ञानी लोगों ने अनेक तरह से ज्ञान का बखान किया। ध्यानियों ने कई तरह से ध्यान का बखान किया, पर यह सब शून्य निराकार के अन्दर ही रहे। किसी के जब संशय नहीं मिटे तो अपने-अपने अनुमान से बोले।

उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाय विष्णु को कारन।
या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन।।१०।।

कई निर्गुणी और निरंजनी ने उपासना की, किन्तु कोई भी विष्णु के कारण स्वरूप (मोह तत्व) को पार नहीं कर सका। शास्त्रकारों को या साधुओं को सबको माया लगी और सब निराकार के अन्दर ही रहे।

इन ऊपर पख है एक, सुनियो ताको कहूं विवेक।
पुरुख प्रकृती उलंघ के गए, जाए अखंड सुख मांहें रहे।।११।।

इसके ऊपर भी एक पक्ष है उसका वर्णन सुनो। जो पुरुष-प्रकृति को उलंघ (लांघ) कर आगे और अखण्ड सुख में पहुंचे।

त्रासिमा पख प्रवान, जो वासना पांचों लिया निरवान।
ए पांचो कहूं अपनायत कर, देखांऊं सब्दातीत घर।।१२।।

तिरासीवें पक्ष में पांच वासनाएं पहुंचीं। इन पांचों को अपना जानकर अपने घर अक्षरातीत की बात बताती हूं।

Nijanand App

नातो प्रबोध काहे को कहूं, चरन पिया के प्रेमें ग्रहूं।
पर साथ कारन कहूं फेर फेर, ए पांचो नाम लीजो चित धर।। १३ ।।

यह अपने न होते तो समझाने की क्या जरूरत थी? अपने धनी के चरणों में चित्त लगाकर आनन्द करती, पर साथ के वास्ते बार-बार कहती हूं कि इन पांचों के नाम चित्त में रखना।

एक भगवानजी बैकुंठ को नाथ, महादेवजी भी इनके साथ।
सुकजी और सनकादिक दोए, कबीर भी इत पोहोंच्या सोए।। १४ ।।

एक भगवानजी बैकुण्ठ के नाथ हैं। महादेवजी को इनके साथ गिनें। शुकदेवजी और सनकादिक दो यह हुए। कबीर भी यहां तक पहुंचे, यह जानना।

लखमीनारायन जुदे ना अंग, सो तो भेले विष्णु के संग।
ए पांचो कहे मैं तिन कारन, चित ल्याए देखो याके वचन।। १५ ।।

लक्ष्मी, नारायण के अंग जुदे नहीं, यह विष्णु के दो स्वरूप हैं। इन पांचों के नाम मैंने इसलिए कहे हैं कि हे साथजी! चित्त में ला करके इनके वचनों को देखो।

देखो सब्द इनों की रोसनी, पर जानेगा बड़ी मत का धनी।
पख पचीस या ऊपर होय, तारतम के वचन हैं सोए।। १६ ।।

इनके शब्दों के ज्ञान को वही जान पाएगा, जिसके पास जागृत बुद्धि होगी। इनके ऊपर पच्चीस पक्ष हैं, जो तारतम की वाणी है।

इन वचनों में अछरातीत, श्री धाम धनी साथ सहीत।
ए देखो तारतम को उजास, धनी ल्याए कारन साथ।। १७ ।।

इन वचनों में अक्षरातीत धाम-धनी, सुन्दरसाथ की हकीकत है, जो धनी अपने सुन्दरसाथ के लिए लाए हैं। इस तारतम वाणी में देखो।

तुम आपको ना करो पेहेचान, बोहोत ताए कहिए जो होए अजान।
तुम जो हो इन घर के प्रवान, सुनते क्यों न होत गलतान।। १८ ।।

तुम अपनी पहचान क्यों नहीं करते। बहुत तो उसे कहना पड़ता है जो अजान हो। तुम तो इस घर परमधाम के ही हो। घर की बातों को सुनकर तुम्हें एक रस हो जाना चाहिए।

सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखियो अपनी।
तुम प्रेम सेवाएं पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार।। १९ ।।

बड़े प्यार से धनी की सेवा करना और अपने घर की पहचान करना। तुम प्रेम सेवा से ही पार पाओगे। ऐसे अपने धनी का फरमान (आदेश) है।

पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदेमें धर।
चरने हैं सोतो आए सही, पर पीछले कारन ए बानी कही।। २० ।।

पिछला सुन्दरसाथ (जो अभी माया में है) कैसे आएगा? प्रकाश की वाणी को समझकर आएगा। जो माया छोड़कर स्वामीजी के चरणों में आए हैं, वह तो आ ही गए हैं और पिछले सुन्दरसाथ के वास्ते यह वाणी कही।

Nijanand App

आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास।
एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं।। २१ ।।

सब अज्ञानता मिटा दी है। अब सुन्दरसाथ इस प्रकाश वाणी के प्रकाश को देखकर आएंगे। यह लीला बहुत भारी है, इसलिए अब कहां तक कहूं?

या वानी को नाहीं पार, साथ केता करसी विचार।
तिन कारन बोहोत कह्यो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए।। २२ ।।

इस वाणी का इतना विस्तार है जैसे एक दरिया का बाढ़। सुन्दरसाथ कितना ग्रहण करेगा? इसलिए मैंने ज्यादा नहीं कहा।

याको नेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिने खिन।
जो वासना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर।। २३ ।।

इस वाणी के एक वचन का भी थोड़ा सा विचार करे तो एक क्षण में घर की पहचान हो जाएगी। जो परमधाम की आत्माएं होंगी वह इन वचनों को कभी नहीं छोड़ेंगी।

ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल।
तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर।। २४ ।।

इन वचनों को सुनते जिसे आवेश आ जाता है, वही तारतम वाणी के फल को (परमधाम) को ग्रहण कर लेगा। श्री महामतिजी कहती हैं कि इस ज्ञान को हृदय में रखो।

॥ प्रकरण ॥ ३४ ॥ चौपाई ॥ १०४२ ॥

गुननकी आसंका

अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहोतक ओचरूं।
भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रेहेवे जिन।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मैंने तुम्हें बहुत कुछ कह दिया है, ताकि तुम्हारे अन्दर कोई संशय न रह जाए। इसलिए मैं कुछ अपनी तरफ से कहती हूं।

मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही।
मैं गेहेरे सब्द कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार।। २ ।।

मैंने धाम धनी के गुणों को लिखा तो है पर एक संशय मेरे मन में रह गया है। मैंने गुण लिखते समय बहुत बड़े-बड़े शब्द कहे हैं। उसका विचार सुन्दरसाथ किस तरह से करेंगे?

जोलों आतम ना देवे साख, तोलों प्रबोध भले दीजे दस लाख।
पर सो क्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुध मन।। ३ ।।

जब तक अपनी आत्मा ही अन्दर से न स्वीकार करे तब तक भले ही दस लाख बार किसी को समझाया जाए तो भी उसे एक वचन का असर नहीं होता। उसे अपनी आत्मा, बुद्धि और मन में समझना जरूरी है।

ताथें यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहे तुमको।
एक प्रवाही वचन यों कहे, मुखथें कहे पर अर्थ ना लहे।। ४ ।।

इसलिए मेरे दिल में एक बात आई कि सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का संशय न रहे। जैसे प्रवाही भी अपने मुंह से बड़े-बड़े शब्द बोलते हैं, परन्तु उनके अर्थ नहीं समझते।

Nijanand App